दुनिया में आने वाले इन्सान चमन के काँटे या फूल ?

(अली मियाँ)

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

का

एक सार्वजनिक व्याख्यान

पयामे इन्सानियत फ़ोरम, पोस्ट बाक्स न० 93,
लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

इस समय देश और समाज की बिगड़ती स्थिति को देखते हुए मानवता अभियान की नितांत आवश्यकता है। मानवता सन्देश अभियान के संस्थापक और महान विचारक हज़रत मौलाना अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०) अ़ली मियाँ ने वर्ष १९७४ में इलाहाबाद से इस काम का शुभारम्भ किया उसके बाद देश का भ्रमण करके देशवासियों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया। दिसम्बर ३१, १९७८ में मदरसा इमदादिया मुरादाबाद के निमंत्रण पर पधारे और इन्साफ कौन्सिल मुरादाबाद के तत्वाधान में आयोजित समारोह में वहां के टाउन हाल में लोगों को सम्बोधित किया जिसमें मुस्लिम भाई तथा बड़ी संख्या में शहर के नागरिक अध्यापक, छात्र, वकील, डाक्टर, व्यापारी, पत्रकार इत्यादि उपस्थित थे, हाल खचाखच भरा हुआ था। मौलाना का यह भाषण जब अलीगढ़ में दंगे हो रहे थे और आस पास खिंचाव का वातावरण था।

मौलाना का यह सम्बोधन हम देशवासियों के लिए इन्सानिंयत का पाठ है जिससे हम सब को लाभ उठाना चाहिए।

www.abulhasanalinadwi.org

इस भाषण का अनुवाद श्री मुहम्मद हसन अंसारी साहब, सहायक सम्पादक हिन्दी मासिक "सच्चा राही" द्वारा किया गया है। पयामे इन्सानियत फ़ोरम द्वारा इस पुस्तक को प्रकाशित किया जा रहा है। पहले भी यह पुस्तक प्रकाशित होती रही है मगर इस समय कम्प्यूटर कम्पोज़िंग करके इसको पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। जिससे हम सब को प्रसन्नता हो रही है।" हज़रत मौलाना (रह०) के निधन के बाद भी आपके सन्देश को हृदय से लगती है। दूसरे सज्जनों तक पहुंचाने का कष्ट करते हैं हमारे पास हर माह इस कार्य से सम्बन्धित प्रशंसा–पत्र आते रहते हैं। इस समय इस कार्य की बड़ी आवश्यकता है जिससे हम देशवासियों के हृदय में इन्सानियत का बोल बाला हो।

पयामे इन्सानियत फोरम

दिनांक : २३.६.२००३

www.abulhasanalinadwi.org

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नये मेहमानों का आगमन

दुनिया में इन्सानों की आमद का सिलसिला हज़ारों नहीं बल्कि लाखों साल से जारी है, और कोई दिन नहीं कि दुनिया की तारीख़ में नये मेहमान न आते हों। सिर्फ़ आज का दिन और सिर्फ़ हमारा और आपका यह शहर मुरादाबाद जिसमें हम सब एकत्र हैं, अगर आप टोह लगायें तो आपको मालूम होगा कि शहर की आबादी में आज भी बढ़ोत्तरी हुई है। यह शहनाइयां जो बज रही हैं। (एक जनसमूह उस समय शहनाइयां बजाता सड़क से गुज़र रहा था) यह लोग जो अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं, यह इस बात के द्योतक हैं कि दुनिया की रौनक़ अभी क़ायम है दिलों में उमंगें हैं और इन्सान इस दुनियां में हंसी खुशी रहना चाहता है।

जो बच्चा भी इस दुनिया में आता है, जो भी नया मेहमान (नव आगन्तुक) हमारी आपकी इस महफ़िल में दाख़िल होता है, वह इस बात का ऐलान करता है कि इस दुनिया का पैदा करने वाला ख़ुदा इन्सान से अभी रूठा नहीं है, इन्सान पर से उसका विश्वास और भरोसा अभी उठा नहीं है, वह इन्सान से निराश नहीं हुआ, अगर ऐसा होता तो खुदा के

लिए कोई मुश्किल नहीं है, वही भेजता है, वह भेजना बन्द कर देता। हमने आपने जलसा किया है, एक छोटा सा प्रयास। जो आ रहे हैं उनको आने दे रहे हैं, हम इनको आदमी समझते हैं, इन्हीं के लिए हमने यह महफिल सजाई है, आपका यह हाल तंग पड़ रहा है, यह इस बात का द्योतक है कि बुलाने वाले भी खुश हैं और आने वाले भी खुश हैं। आने वाले शौक़ से आ रहे हैं औ बुलाने वाले शौक़ से इनका जगह दे रहे हैं, अगर बस चले तो इनको आँखों में जगह दें।

खुदा इन्सानों को दुनियां में मजबूरी से नहीं भेज रहा है, हमने स्वयं अपने मेहमानों को मजबूरी से जगह नहीं दी है, शौक से जगह दी है। शहर में ऐलान किया, कार्ड बटवाये, हमने स्वयं बुलाया है, यह बिन बुलाये नहीं आये। जब यह हमारे बिन बुलाये नहीं आये तो खुदा की मख़लूक़ (सृष्टि) दुनिया में बिन बुलाये कैसे आ सकती है।

तो जो बच्चा भी इस दुनिया में पैदा होता है वह चाहे किसी भूखण्ड में पैदा हो, भारत में पैदा हो या यूरोप व अमरीका में, मध्यपूर्व में पैदा हो अथवा सुदूर पूर्व में, वह इस बात का साफ एलान करता है कि अभी इस संसार का पैदा करने वाला इन्सानों से निराश नहीं है, वह इनको बसाना चाहता है, वह इनको मदद करता है, स्वयं हमारी पीठ पर हमारी

कमर पर उसका हाथ है, अगर उसका हाथ न होता तो कितने फूल बेखिले मुर्झा जाते, लेकिन इतनी लम्बी यात्रा करके जो मेहमान यहां आ रहा है इसका मतलब यह है कि खुदा इस दुनिया से अभी निराश नहीं है, अगर खुदा इस दुनिया से रूठ जाये तो इसको अभी तोड़–फोड़ के रख सकता है, कितनी लड़ाइयां हुई, इन्सानों ने इस दुनिया को नष्ट करने की कितनी कोशिशें की लेकिन कामयाब न हुए। यह जो दो विश्व युद्ध हुए, इनकी आग भड़काने वालों ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया कि यह दुनिया ख़त्म हो जाये किन्तु दुनिया फिर भी क़ायम है और इसकी चमक दमक बाक़ी है।

शिला लेख

अगर खुदाका हाथ इस दुनिया की पीठ पर न होता, इन्सानों के सर पर न होता, खुदा की हिफ़ाज़त न होती, खुदा अभी इस दुनिया से खुश न होता और इन्सान उसको प्यारा न होता तो यह जो यूरोप व अमरीका के जादूगर हमारी क़िस्मत के मालिक बने बैठे हैं, यह कबका इस संसार को खत्म कर चुके होते किन्तु उनके इतने संगठित प्रयासों के होते हुए भी जिसके पीछे विज्ञान था, टेक्नोलॉजी थी और वह अब अणु शक्ति भी आ गई है, इस पर भी यह इस संसार को नष्ट करने

में सफल न हो सके यह अकाट्य सत्य है कि खुदा इस दुनिया से निराशा नहीं है। अभी खुदा इस दुनिया से निराश नहीं हुआ कि यह फर्श जो बिछाया गया है, यह शामियाना जो लगाया गया है, इसे तह करके रख दे। अन्यथा एक मिनट नहीं, सेकेण्ड नहीं, सेकेण्ड के भी हजारवें हिस्से में इस दुनिया को ख़त्म कर सकता है। हमको कुरआन में बताया गया है कि उसके इरादे की देर होती है, उसने इरादा किया और काम हुआ। अरे भाई हम टेलीफोन करते हैं, रिसीवर उठाया नम्बर मिलया तुरन्त बात हो गयी तो खुदा को क्या देर लग सकती है।

क्या आप खुदा की इच्छा नहीं समझते ? खुदा को अभी दुनिया बाक़ी रखना है। किन्तु हमारा आपका व्यवहार क्या सिद्ध करता है? खुदा भले इस दुनिया से खुश हो और प्यार करे किन्तु हम इस दुनिया से खुश नहीं। खुदा तो मेहमान पर मेहमान भेजे और जब मेहमान आता है तो अपनी रोज़ी लेकर आता है। यह तो हमारी कमी है कि उसको समय पर खाना न मिले, खुदा जो मेहमान भेजेगा उसकी रोज़ी भी भेजेगा । किन्तु हम क्या सिद्ध कर रहे हैं? हम यह सिद्ध कर रहे हैं कि इन्सान से बढ़कर कोई वस्तु घृणा के योग्य नहीं है।

www.abulhasanalinadwi.org

राउरकेला, जमशेदपुर, अलीगढ़ जहां जहां साम्प्रदायिक दंगे हुए वहां के उन शरीफ़ आदमियों ने कितने सांप बिच्छू मारे होंगे। अगर इसको कोई दफ़्तर होता तो मैं वहां जाकर पूछता, उसके आंकड़े देखता कि भाई हर व्यक्ति बताये कि उसने कितने बिच्छू मारे, कितने सांप मारे, कितने भेड़िये, चीते और शेर मारे। इनमें कतिपय लोगों की ज़िन्दगी गुजर जाती है और विषैले जानवर मारने की तौफ़ीक नहीं होती, किन्तु इन्सान इन्सान को किस तरह मारता है। देखिये खुदा और इन्सान के काम में एक टकराव और विरोधाभास है, खुदा चाहता है यह दुनिया पनपें, फले–फूले, हरी भरी हो, चमक–दमक वाली हो, यहां उसकी रहमत (कृपा, दया) की,मुहब्बत की हवायें चलें, यहां प्रेम व मुहब्बत की बांसुरी बजे, प्रेम की सुगन्ध फैले। वह देखकर खुश होता है, मैं खुश हो रहा हूं, यह चेहरे देखकर। किस तरह अपना दिल दिखाऊं कि कितनां खुश हो रहो हूं। तो खुदा क्या जो इस दुनिया का माली है, पालनहार है, इन्सान को बनाने वाला है, खुश नहीं होता ? अपनी बनाई हुई चीज़ पर सब प्रसन्न होते हैं।

निगाहों का जादू

मुरादाबाद वालों को अगर अपने बर्तनों पर गर्व है तो खुदा को अपनी बनाई हुई चीज पर गर्व नहीं

होगा ? मुरादाबाद का निवासी जब कहीं जाता है तो कहता है कि मैं उस जगह का रहने वाला हूं जहां से बेहतर बर्तन और कहीं नहीं बनते। ठीक है। हम भी मानते हैं। हमें आपका यह दावा स्वीकार है। किन्तु क्या हम और आपको गर्व करने का हक़ है ? बर्तन बना लिया तो उस पर खुश, एक मशीन बना ली तो उस पर खुश । और खुदा ने यह गुलदस्ता बनाया यह चमन खिलाया, इन्सान को पैदा किया जिसके कारण हर चीज़ में क़ीमत पैदा हुई। उसे अपनी पैदा की हुई चीज़ पर खुश होने का हक़ नहीं?

कहां का सोना, कहां की चांदी, कहां का मुरादाबाद का बर्तन और कहां अमरीका का कम्प्यूटर और कहां की मशीनरी सब हमारी और आपकी निगाहों का जादू है। हमने अपने सोने को देखा, क़दर की निगाह से सोना हो गया। अगर हम आप आज कोई इन्टरनेशनल कन्वेंशन कर लें या हम कहीं निश्चय कर लें कि हमें सोने से कोई मतलब नहीं, सोना हमें पसन्द नहीं तो सोना और मिट्टी बराबर हो जाये। सोना स्वयं कुछ नहीं, आपकी निगाहें टूट जाने वाले शीशे पर पड़ीं तो वह ऐसा हुआ कि उसको दिल की तरह अज़ीज़ रखने लगे।

www.abulhasanalinadwi.org

कोई तोड़ नहीं सकता फूल और कांटे में अन्तर क्या है? आपने फूल कहा तो फूल हो गया, आपने कांटा कहा तो कांटा हो गया। तो हम आप निश्चय कर लें कि आज से फूल कांटा है और कांटा फूल है तो फूल कांटा हो जायगा और कांटा फूल हो जायगा। यह सब हमारी और आपकी निगाह का खेल है। दिल के झुकाव का, दिल जिधर झुका बस उसी चीज में क़ीमत पैदा हो गई।

बाज़ार में भाव क्यों बढ़ता है। आप सब कारोबारी आदमी हैं। भाई ! भाव क्यों बढ़ा? कल वही चीज़ थी, आज भी वही चीज़ है किन्तु कल उसके दाम कुछ और थे, आज उसके दाम कुछ हैं। क्या अन्तर हुआ ? कहां से अन्तर आया ? केवल आपकी मांग अधिक हो गई, आप को ज़्यादा चाहत हो गयी। आप इसे अधिक ख़रीदते चले गये, दाम बढ़ गये अगर आप कहें कि कल से हम अमुक कपड़ा नहीं खरीदेंगे तो वह कपड़ा बेक़ीमत हो जायेगा, कपड़ों के जो नये नये फ़ैशन निकलते हैं उनकी हक़ीक़त क्या है? यह फ़ैशन पेरिस से निकला है, लन्दन से निकला है, लोगों ने पसन्द किया और फ़ैशन बन गया और सारी दुनिया में फैल गया और फिर इसके बाद उसको ऐसा भूल जाते हैं कि अगर कोई उस फ़ैशन में निकले तो उसे दीवाना समझें और आउट

www.abulhasanalinadwi.org

आफ डेट समझें।

अपटूडेट और आउट आफ़ डेट की हक़ीक़त क्या है ? आपने कहां यह चीज अच्छी है समय के अनुकूल है, वह अपटूडेट हो गई, आपने कहा यह पुराने समय की चीज़ है, हमें पसन्द नहीं तो आउट आफ़ डेट हो गई।

तो आप ही इस दुनिया में सब कुछ हैं किन्तु आपका व्यवहार यह बताता है कि आप खुदा की मर्जी पर खुश नहीं हैं। खुदा कुछ चाहता है आप कुछ चाहते हैं, खुदा बनाना चाहता है आप बिगाड़ना चाहते हैं खुदा सुखी रखना चाहता है आराम पहुंचाना चाहता है आप कहते हैं हम आराम नहीं पहुंचने देंगे। यह हमारा व्यवहार है, मानो हमें खुदा से लड़ाई है। क्षमा करें हमारे हिन्दू मुसलमान भाई, हम सब मज़हबी (धार्मिक) लोग हैं। हम सब विश्वास रखते हैं मज़हब की हक़ीक़तों में, उसकी सच्चाइयों में । किन्तु हम अपने व्यवहार एवं आचरण से सिद्ध करते हैं जैसे हमको खुदा से ज़िद हो। वह दिन कहे तोहम रात कहें, वह अच्छा कहे तो हम बुरा कहें, वह बुरा कहे तो हम अच्छा कहें। वह कहे कि मिलकर रहो, प्रेम से रहो, हम कहें कि हमें मन्जूर नहीं।

www.abulhasanalinadwi.org

ईश्वर की सहनशीलता

एक दुकान पर आप चले जाइये और दो एक बर्तनों पर हाथ साफ़ कर दीजिए। सामान अस्त व्यस्त कर दीजिए, तोड़ने फोड़ने की बात तो दूर रही, तो दुकानदार चाहे आप का कैसा घनिष्ठ मित्र हो, कितना ही शरीफ़ आदमी हो, बिगड़ जायगा। और आस्तीन चढ़ा लेगा कि आपको क्या हक़ है हमारी दुकान को आपने अस्त व्यस्त क्यों किया। खुदा की सहनशीलता देखिए कि बराबर इन्सानों को भेज रहा है बराबर रोजी दे रहा है, ज़मीन गल्ला उगा रही है। आसमान पानी बरसा रहा है। किसी चीज़ में कोई हड़ताल कोई स्ट्राइक नहीं कि खुदा ने वह चीज़ रोक दी हो हमारी नालायक़ी से, किन्तु हमारा क्या व्यवहार है? हम खुदा को बराबर क्रोधित करना चाहते हैं, धन्य हैं, उसकी प्रशंसा और बड़ाई है कि वह बच्चों की तरह क्रोधित नहीं होता, अन्यथा अगर हमारे करतूतों से वह गुस्से में आ जाता तो कब की यह दुनिया लपेट कर रख दी जाती यह इस बात का लक्षण है कि खुदा इतने दिनों से सहन कर रहा है, खुदा अभी इस दुनिया से निराश नहीं है, रुस्ट नहीं है। और हम बात बात पर रुस्ट होते हैं। हमें चाहिए था कि खुदा का

हमारे साथ जो व्यवहार है कम से कम अपने साथियों के साथ अपने भाइयों के साथ हम वह व्यवहार करते।

खुदा तो ऐसा है कि जो चाहो कर गुज़रो और वह रुष्ट नहीं होता, अर्थात् इस प्रकार नाराज़ नहीं होता कि दुनिया को तह करके रख दे। उलट कर रख दे कि बस ख़त्म। वहीं ज़मीन व आसमान, चांद सूरज, बादल व वर्षा, वही विधि का विधान बराबर चले आ रहे हैं। हज़ारों लाखों साल से । मगर हमें कुछ तो सोचना चाहिए कि आख़िर यह कब तक होता रहेगा।

ज्ञान ने क्या लाभ पहुँचाया

आज दुनिया में ज्ञान का कितना ढिंढोरा पीटा जा रहा है, डंका बजाया जा रहा है। लेकिन क्या ज्ञान ने हमें फायदा पहुंचाया। क्या हमको आदमी बना दिया? ज्ञान का लाभ तो हमने यह उठाया कि जो काम हम भद्दे ढंग से करते थे, देर में करते थे, उसे हम बहुत अच्छे ढंग से, उन्नतशील ढंग से बहुत जल्दी कर लेते हैं। अर्थात् पहले बरबादी बैलगाड़ी पर बैठकर आती थी, बैलगाड़ी देर से पहुंचेगी तो बरबादी भी देर से पहुंचेगी। फिर वह घोड़े से जाने लगी। फिर रेलगाड़ी से, फिर हवाई जहाज से जाने

www.abulhasanalinadwi.org

लगी और अब वह अणु शक्ति से जाने लगी। बताइये क्या इन्सानों के लिए अच्छा हुआ ? पहले ही ग़नीमत था कि एक बादशाह देश जीतने चलता था। घोड़ों पर ऊँटों पर, हाथियों पर, इतनी देर में दूसरे लोगों को ख़बर होती वह तैयारी कर लेते हैं। अब तो साइंस ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि एक मिनट की भी मोहलत नहीं मिल सकती। हिरोशिमा में, नागासाकी में क्या हुआ? क्या उनको कुछ मुहलत मिली ? ज्ञान प्राप्ति तो हो रही है किन्तु यह ऐसी है जैसे किसी शराबी के हाथ में, किसी बदमस्त के हाथमें तलवार आ जाये। तेज धार की कोई चीज़ आ जाये। वह तो शराबी बदमस्त है किसी का गला काट देगा। भाई का गला काट दे। ऐसे ही आज भाई भाई का गला काट रहा है।

ख़तरा (जोखिम) मोल लेना पड़ता है

मेरे भाइयो और दोस्तो ! अभी खुदा ने हमें मुहलत दी है और देखिये अब भी आवाज़ में, सच्चाई में, सद्भाव में, सादगी में, दर्द में असर है कि इतने आदमियों को यह दर्द बुला सकता है। तड़पने वाले, सोचने वाले मन मस्तिष्क हमारे देश में बड़ी संख्या में मौजूद हैं किन्तु कोई साहस नहीं करता। जो दंगे होते हैं उनमें सब लोगों को हिस्टीरिया

www.abulhasanalinadwi.org

का दौरा नहीं होता, सब पागल नहीं हो जाते किन्तु होता यह है कि कुछ एक बदमाश, खुदा से न डरने वाले, इन्सान को कोई चीज़ न समझने वाले मैदान में आ जाते हैं और हर शरीफ़ आदमी अपनी अपनी खैर मनाने लगता है कि इन गुंडों और बदमाशों के कौन मुंह लगे? इनके कौन सामने आये। अपनी इज़्ज़त ख़ाक में मिलाये। शरीफ लोग अपने घरों में बैठ जाते हैं और अपनी ख़ैर मनाने लगते हैं। अन्यथा कोई शहर, कोई गांव भले लोगों से ख़ाली नहीं है किन्तु वह डरते हैं संकोच करते हैं। उनका ज़ोर जादू चल जाता है जो बदमाश है खुदा से नहीं डरते। शरीफ आदमी अपने घरों में बैठे रहते हैं। वह कहते हैं भाई! इन व्याभिचारियों, कमीनों, खूंखारों के मुंह कौन लगे, कौन इनके सामने आये। लेकिन अगर इस दुनिया में ऐसा ही होता रहे तो यह दुनिया चल नहीं सकती इसमें तो खतरा मोल लेना पड़ता है।

एक सार गर्भित उदाहरण

मेरी जानकारी अधिकांशतः धार्मिक है। हमारे पैगम्बर साहब ने एक उदाहरण दिया है। इससे अच्छा उदाहरण मुझे अब तक नहीं मिला। इसलिए इसे बयान करता हूं। ..... अन्याय व अत्याचार,

आवारगी व अव्यवस्था, फ़ितना व फ़साद यह अगर दुनिया में आये तो इसको रोकना चाहिए हिम्मत करके, चाहे इसमें कितना नुक़सान हो जाये। अगर नहीं रोकोगे तो तुम भी नहीं बचोगे। इसकी आपने मिसाल दी कि एक किश्ती (नवका) है उस पर लोग जा रहे हैं नदी की यात्रा है। किश्ती में एक अपर क्लास है एक लोअर क्लास है। एक ऊपर का हिस्सा है जैसे आजकल फर्स्ट क्लास होता है और नीचे डेक होता है । कुछ यात्री डेक पर हैं और कुछ यात्री फर्स्ट क्लास में हैं। पानी की व्यवस्था संयोग से ऊपर ही है। किश्ती तो नदी में चल रही है लेकिन नदी से पानी लेना हर एक के बस का काम नहीं, डोल हो रस्सी हो। तो यह नीचे वाले पानी लेने ऊपर जाते हैं। पानी स्वभावतः गिरता टपकता है। जब पानी लेकर चले तो किश्ती हिली थोड़ा यहां गिरा थोड़ा वहां टपका। साहब लोगों ने, अपर क्लास वालों ने आस्तीनें चढ़ा लीं कि साहब पानी की ज़रूरत आपको, पानी की ग़रज़ आपको और परेशान हम होते हैं। देखिये हमने कपड़ा बिछा रखा फर्श बिछा रखा था आपने इसको भिगो दिया । देखिऐ हमारे ऊपर छीटें पड़ गये। हम आपको पानी नहीं ले जाने देंगे।

उन्होंने कहा पानी के बिना कैसे रहा जा

www.abulhasanalinadwi.org

सकता है? ऊपर वालों ने कहा चाहे जो हो हम आपको पानी नहीं ले जाने देंगे। पैग़म्बर साहब ने फ़रमाया कि नीचे वालों ने सोचा कि पानी तो हम जरूर लेंगे पानी के बिना गुजारा नहीं, ऐसा करो कि नीचे सूराख कर लो और यहीं से अपना डोल, लोटा डालकर पानी निकाल लिया करो। आपने फ़रमाया कि अगर उन लोगों में समझ है और सूझ–बूझ है तो यह खुशामद करेंगे उनके पास जायेंगे कि तुम पानी लेने आते थे और हम नाराज़ होते थे। हम स्वयं पानी पहुंचा देंगे किन्तु खुदा के लिए हमारे ऊपर रहम खाओ, किश्ती में सूराख न करो। और अगर उन्होंने कहा कि हमारी बला से। अरे भाई सूराख तो नीचे ही हो रहा है, ऊपर तो नहीं हो रहा है, हम तो ऊपर वाले हैं। हम तो अपर क्लास के लोग हैं और यह लोअर क्लास के नीच लोग हैं। सूराख़ कर रहे हैं तो नीचे कर रहे हैं, हम तो आराम से रहेंगे। आपने फ़रमाया जब सूराख़ होगा तो न लोअर क्लास वाले बचेंगे और न अपर क्लास वाले बचेंगे। किश्ती डूबेगी तो सबको लेकर डूबेगी।

आज हमारा समाज, मैं केवल हिन्दुस्तान को नहीं कहता, हमारा यह वर्तमान बीसवीं शताब्दी का समाज ऐसी ही किश्ती बन गया है कि इसमें अपर क्लास वाले भी हैं और लोअर क्लास वाले भी हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

अपर क्लास वालों के माथे पर बल आते हैं और यह बात बात पर भेद–भाव करते हैं। यह ऊंच–नीच की भावना से ग्रसित हैं। नीचे वाले कहते हैं (नीचे ऊपर का अन्तर यूं समझिये कि जिसको जरूरत पड़ती तो उसे आप लोअर क्लास समझलें और जिसे जरूरत नहीं पड़ती उसे अपर क्लास) कि हमें अपने काम से काम है, हम कुछ नहीं जानते हमारा काम तो निक़लना चाहिए। भ्रष्टाचार है, चोर बाज़ारी है, ब्लेक मार्केटिंग है, बेईमानी है, कामचोरी है, मज़दूर काम नहीं करता, मज़दूर ज़्यादा लेना चाहता है और जो मिल और कारखाने का मालिक है वह चाहता है कि यह काम तो करे पूरा सोलह आने और अगर कोई ऐसा कानून हो कि एक आना हम दे सकें तो एक ही आना दें। फलतः हर एक अपना काम निकालना चाहता है, सब लोग अप्रत्यक्ष रूप से सूराख करके पानी भर रहे हैं। पूछना पाछना कुछ नहीं, अपना काम है। अल्लाह ने हमको हाथ दिये हैं, पांव दिये हैं, समझ दी है जो कुछ हमारी समझ में आयेगा करेंगे, अब समाज में जो लोग समझदार हैं बुद्धिजीवी हैं, स्कालर हैं, देशभक्त हैं अगर उन्होंने कहा हमारी बला से, यह जाने इसका काम जाने, हम आंखें बन्द कर लेते हैं। यह चाहें मरे या जियें। तो नतीजा क्या होगा? किश्ती में पानी भरेगा,

www.abulhasanalinadwi.org

किश्ती डूबेगी, और भाई जब किश्ती डूबेगी तो भेदभाव नहीं करेगी। आग जब किसी गांव में लगती है तो वह भेदभाव नहीं करती कि वह मुसलमान का घर है यह हिन्दू का घर है, यह शरीफ आदमी का घर है, यह खां साहब का घर है, यह शेख साहब का घर है, या पण्डित जी का घर है, यह अमुक व्यक्ति का घर, कुछ नहीं। आग तो अन्धी बहरी होती है जब लगती है तो सब जलाकर ख़ाक स्याह कर देती है। बाढ़ आती है तो यह अमीर–गरीब, ऊंच–नीच में कोई अन्तर नहीं करती।

हमारा समाज डांवाडोल

मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि आज समाज की नवका डांवाडोल हो रही है। और इसमें बहुत से यात्री ऐसे हैं जो इसमें सूराख़ किये हुए हैं और सूराख़ से अपना डोल डाल कर पानी भर रहे हैं। दफ़्तरों में क्या हो रहा है ? स्टेशनों पर क्या हो रहा है ? और हमारे मुहल्लो में क्या हो रहा है? आदमी को बस अपने काम से मतलब है और किसी चीज़ से मतलब नहीं। हमारा उल्लू सीधा होना चाहिए हमारी ज़बान का बहुत फूहड़ सा मुहाविरा है कि हमारा उल्लू सीधा होना चाहिए बाक़ी हमको मतलब नहीं है किसी पर क्या गुज़रती है। इसी पर सबका

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वास है। नतीजा यह है कि सारा देश अपना फ़ायदा देख रहा है।

वही बात हुई कि एक बादशाह था उसने एक तालाब बनवाया और घोषणा किया कि हमें दूध का हौज़ चाहिए। सब लोग इसमें दूध डालें। एक–एक बाल्टी दूध लायें और हमसे पैसे ले लें। हर व्यक्ति ने सोचा, मैंने सोचा, आपने सोचा कि अरे भाई सब लोग तो दूध की बालटियां डालेंगे, एक मैंने अगर पानी की बाल्टी डाल दी तो क्या पता चलेगा। कौन इसकी छान बीन करेगा कि दूध के हौज में कितनी पानी की बालटियां हैं और कौन लाया था ? एक व्यक्ति चला वह पानी की बाल्टी ले चला और उसने बाल्टी डाल दी। हर एक ने ऐसा ही किया। हर आदमी ने इसी प्रकार सोचा। नतीजा यह हुआ कि प्रातः बादशाह सलामत आये । प्रसन्नचित कि हौज़ लबालब सफ़ेद दूध से भरा होगा और हम इस पर गर्व करेंगे कि हमने दूध से हौज़ भर दिया। देखा कि वहां तो पानी भरा हुआ है। अरे यह क्या गज़ब हुआ ? मालूम हुआ कि पूरे शहर ने एक ही जैसा सोचा।

आज समस्या यह है कि हर व्यक्ति एक जैसा सोच रहा है। कुछ लोगों का अपराध तो है। खुदा ने पांच उंगलियां बराबर नहीं कीं। किन्तु बाल्टी

www.abulhasanalinadwi.org

वाला ट्रेंड (झुकाव) बढ़ रहा है। पैसा और भौतिक लाभ में हमारा विश्वास बढ़ रहा है। खुदा का डर और ईमानदारी का घेरा सिमटता जा रहा है।

हमारे समाज की बीमारी यह है कि हर एक अपनी मुट्ठी तुरन्त गरम करना चाहता है। भाई एक दो, दो चार हज़ार की मुट्ठी गरम होने से कुछ नहीं होता। इस समाज का क्या होगा, जिसमें मुट्ठी तो गरम हो गई किन्तु समाज बुझता जा रहा है, ठंडा पड़ता जा रहा है, आज हमारा विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि जिस काम से चार पैसे मिलें वही काम समझदारी का है। वह काम कदापि समझदारी का नहीं है मन मारिये, फिर आपका मन प्रसन्न होगा। आपके मन को संतोष प्राप्त होगा। किन्तु अगर शीघ्रातिशीघ्र मन प्रसन्न करना चाहें तो किसी का मन प्रसन्न नहीं होगा। फिर आप देखेंगे कि यह समाज, यह दुनिया बवाल (नर्क) बन जायेगी और लोग पनाह मांनेंगें ओर कहेंगे खुदा मौत दे।

हम तो जीने के हाथों मर चले

ऐसे समाज में मौत की इच्छा होती है और आज अगर आप लोगों को तलाश करेंगे तो कितने भाई आप को ऐसे मिलेंगे जो मरना पसन्द करते हैं इस जीने से तो मरना अच्छा। हमने कवियों की

रचनाएं पढ़ी हैं, साहित्यकारों के लेख देखे हैं कि जब यह लालच की बला, यह धन का मोह बढ़ गया, सबने अपनी मुट्ठी गरम करनी चाही । सबने अपने दिल को खुश करना चाहा। फिर नतीजा यह हुआ कि जिस प्रकार मछली को पानी से निकाल कर आप बाहर डाल दीजिए, उसका दम घुटने लगता है उसी प्रकार पूरी सोसाइटी का दम घुटने लगा। पूरा समाज ऐसा हो रहा है कि जो पवित्र है, नियम का पालन करने वाला है उसका गुज़र नहीं। और जो क़ानून को पैरों तले कुचल देने वाला है उसकी जीत है, उसका बोलबाला है। फलतः जो लोग इस रास्ते पर चलना चाहते हैं वह भी थोड़े दिनों के बाद वह रास्ता छोड़ देना चाहते हैं।

हमारे पास बहुत से लोग आते हैं मौलवी समझ कर किसी सलाह के लिए। हमें कितने लोगों ने बताया कि हम रिश्वत नहीं लेते। हमसे बुरा कोई विभाग में नही है। अर्थात् रिश्वत लेने वाले को जिस दृष्टि से देखना चाहिए था आज रिश्वत न लेने वाले को उस दृष्टि से देखा जा रहा है अरे इसको निकालो यह एक गन्दी मछली है जो हमारे यहां आई है, इसको निकालो। अरे भाई हम तुम्हारा क्या बिगाड़ते हैं? नहीं साहब नेक आदमी (सज्जन पुरूष)

हमको पसन्द नहीं। इसलिए कि हमारी आत्मा किसी समय तो हमको मलामत करती है, चुटकियां लेती है कि एक यह आदमी है जो रिश्वत नहीं लेता। हम यह भी सहन नहीं करना चाहते। एक व्यक्ति भी ऐसा न रहे जिसे देखकर हमें शर्म आये।

समाज के पतन की यह चरम सीमा है कि समाज ऐसा हो जाये जिसमें नेकी के क़ानून पर चलने की गुंजाइश न रहे और जो क़ानून पर चलना चाहे, इंसान को इंसान समझे और खुदा से डरे उसका दम घुटने लगे।

मेरे भाइयो हम और आप एक किश्ती के सवार हैं, हमारी नवका में कुछ लोगों ने बहुत बड़ा सूराख करने का संकल्प लिया है। हमारे ही समाज के बहुत से लोगों ने छोटे सूराख़ तो बहुत से किये हैं जो बहुत दिनों से हैं, पानी थोड़ा–थोड़ा आ रहा था, किन्तु यह नवका चूंकि बहुत बड़ी है, और बड़ी नवका देर से डूबती है, छोटी नाव हो तो तुरन्त डूब जाये। हमारे देश की किश्ती जरा बड़ी है, इसलिए आपको अभी नज़र नहीं आ रहा है कि इसमें कितना पानी आ गया, एक जगह आया है, दूसरी जगह आया। कई खण्ड हैं और बहुत बड़े–बड़े, इसका कोई ओर छोर नहीं । यह ६५ करोड़ की

www.abulhasanalinadwi.org

आबादी का देश है और बहुत बड़ा देश है। कहते हैं हाथी को मरते मरते देर लगती है । एक पक्षी है उसे आप उंगली में लीजिए और मसल डालिए लेकिन हाथी तो देर में मरेगा।

हमारा देश बहुत बड़ा देश है। और खुदा का शुक्र है कि बड़ा देश है। हमको आपको इसकी क़दर नहीं है। मेरे एक मित्र हैं हैदराबाद के, वह पेरिस में रहते हैं। वहां बहुत बड़े लेखक और विद्वान माने जाते हैं। जनेवा में एक कान्फ्रेंस थी। उसमें हम दोनों सम्मिलित हुए। हम लोग वहां के हवाई अड्डे पर सैर करने लगें मेरे पास इन्टरनेशनल पासपोर्ट था और हर जगह जा सकता था। जर्मनी का भी मेरे पास वीजा था और फ्रांस का भी। मेरे मित्र टहलते टहलते अचानक रूक गये और कहने लेग कि यदि मैं यहां कदम रख दूं (हवाई अड्डे का ही एक हिस्सा था) तो मैं जर्मनी पहुंच जाऊंगा और फिर उसके बाद बिना वीज़ा के नहीं आ सकूंगा। तो यूरोप में ऐसे छोटे–छोटे देश हैं कि यदि आप मोटर चलायें तो सीमा पार कर जायें और दूसरे देश में पहुंच जायें। यहां यह हाल है कि तीन रातें तीन दिन चलिए। बंगलौर जाइये कालीकट जाइये, रास्ता ही नहीं समाप्त होता। भाइयो, यह प्रसन्नता की

www.abulhasanalinadwi.org

बात है कि हमार देश बड़ा है किन्तु यह बात बड़ी ज़िम्मेदारी की भी है। इस देश को संभालिये। अब इस देश में इस बात की ज़्यादा गुंजाइश नहीं है कि जो लोग सूराख़ कर चुके हैं या सूराख़ करने पर कमर बांधे हैं, हम उनको ढील दें छूट दें कि यह जाने इनका क़ाम जाने।

तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

अब तो हमको आपको मिलकर इस किश्ती को संभालना है और इसे देश की ख़बर लेनी है, अन्यथा भाई, "तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में"। अत्याचार के बाद कोई देश पनप नहीं सकता।

जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं।
नाव कागज़ की सदा चलती नहीं।।

हमने बचपन में यह सबक़ पढ़ा था। आज बड़े–बड़े मन्त्रियों को, बड़े–बड़े प्रोफ़ेसर और लीडरों को फिर सुनाने की ज़रूरत है –

"जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं"।

हमने देखा कितनी सरकारी यहां आईं और चली गईं। अंग्रेज जाने वाले थे? वह कोई साधारण लोग न थे। उनका शासन साधारण था? ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता था। किन्तु उन्हों ने

अत्याचार किया था। यही आपका शहर मुरादाबाद है कहते हैं कि १८५७ ई. में अंग्रेजों ने यहां के सैकड़ों लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया था। और फिर ऐसा बोरिया उनका बंधा जैसे कहते हैं कि गधे के सर से सींग ग़ायब।

भाई ! कोई मज़हब हो, कोई पार्टी हो, कोई संप्रदाय हो, कोई समाज हो, अत्याचार को ख़ुदा सहन नहीं करता। अगर आप यह समझते हैं, कोई सम्प्रदाय, कोई वर्ग कोई कलास यह समझता है कि हम अत्याचार करके, बेगुनाहों का खून करके और बच्चों को दीवारों पर पटक करके और भट्ठी में डाल डाल कर हम अपना सिक्का बिठालेंगे, हम अपने लिए इस देश का पट्टा लिखवा लेंगे, तो वह भूल में हैं, उसे अपनी भूल से निकलना चाहिए। खुदा इस तरह करने तो देता है किन्तु करने के बाद पनपने नहीं देता। यह जीने के लक्षण नहीं है, जो हम हिन्दुस्तान में कर रहे हैं। अरे भाई ! मानवता तो यह है कि इन्सान इन्सान को देखकर खुश होता है, बिच्छू और सांप भी मिल जाते हैं, भेड़िये भी साथ चलते हैं, लेकिन यह किस प्रकार का इन्सान है कि यह इन्सान को सहन नहीं करता। क्या दौरा इस पर पड़ता है?

कोई यात्री बेचारा कहीं से आया, आप के मुरादाबाद के स्टेशन से कहीं निकला था। कुछ नहीं देखा कि यह कौन है ? अपनी मां की ख़बर लेने जा रहा है या अपनी बीवी के मुंह में कुछ रखने कि बेचारी भूखी है, बम्बई से कमा कर आ रहा है। अपना खून पसीना एक करके पैसे जमा किये। किसी अत्याचारी ने छुरा निकाला और घोंप दिया।

अरे तूने किसको मारा ? खुदा के बन्दे जरा देख, तूने किसको मारा? उसको मारा जिसको मां ने दूध पिला पिला कर, छाती से लगा लगाकर रातों को नींद हराम करके पाला था। खुदा ने उसकी रोज़ी भेजी थी। बीमार हुआ तो कैसे–कैसे उसके इलाज हुए थे? किस–किस तरह से पढ़ाया गया ? और जब वह जवान हुआ, खाने कमाने के योग्य हुआ, तूने ऐ निर्दयी ! खुदा और इन्सान के दुश्मन ऐ अन्धे इन्सान !! तूने किसके छुरा घोंपा?. अगर तुझे मालूम हो जाये तो तू हज़ार बार मरना स्वीकार करे और कभी न मारे। उसके मरने की ख़बर जब उसके घर पहुंचेगी, लाश पहुंचेगी तो क्या होगा ? तू ख़ुदा को मुंह दिखाने के योग्य है ? अत्याचार अन्धा और बहरा होता है। छुरा निकाला और किसी को घोंप दिया। मैं हिन्दू मुसलमान किसी को नहीं

कहता। उस छुरा मारने वाले को न मैं मुसलमान समझता हूं न हिन्दू। मैं इस्लाम धर्म की भी हतक समझता हूं और हिन्दू धर्म की भी हतक समझता हूं। हज़ार बार उनका धर्म उनसे बेज़ार है। वह हज़ार बार अपने धर्म की पुस्तक अपने सर पर रखकर क़सम खायें कि हम मुसलमान हैं, हिन्दू हैं। उसके ऊपर ख़ुदा की फिटकार पड़ती है ख़ुदा बेज़ार है ऐसे लोगों से। धर्म यही सिखाता है ? ग़लती करे कोई मारा जाये कोई।

हज़ार चीतों से अधिक ख़ूँख़ार

वह बेचारा अभी स्टेशन से बाहर ही आया था। कैसे–कैसे अरमान लेकर आया था। घर जाऊँगा। माँ की बाँछें खिल जायेंगी। माँ आगे बढ़ेगी कि मेरा लाल आ गया। बीवी ख़ुश हो जायेगी। उसका चेहरा दमकने लगेगा। बच्चे आकर पांव से लिपट जायेंगे। मैं बम्बई से सौगात लेकर आया हूं। मैं किसी के लिए रूपये लेकर आया हूं। किसी के लिए कुर्ता लाया हूं। किसी के लिए जूते लाया हूं, किसी के लिए मिठाई लाया हूं। यह सारे अरमान उसके दिल में रहे और उस अत्याचारी ने, उस क़ातिल ने, उस ख़ूंख़ार ने, हज़ार चीतों से अधिक ख़ूंख़ार, हज़ार बिच्छुओं और सांपों से अधिक प्रकोप का

पात्र, उसने न आव देखा न ताव, न यह देखा कि कहां से आया है, कितनी दूर से आया है, कैसे–कैसे सुहाने सपने देखते हुए आया है, और छुरा घोंप दिया। दुनिया में कौन सा धर्म है जो उसको सीने से लगाये और प्यार करे। जूतों से मारे जाने योग्य है। जूतों की तौहीन है, जूतों के तलुओं की तौहीन है। पवित्र हाथ उस पर पड़कर अपवित्र हो जायेगा।

मेरे भाइयो ! यह पनपने की बातें हैं? यह खुदा के प्यार व मुहब्बत को खींचने वाली बातें हैं ? यह दुनिया में तरक़्क़ी करनेवाली और देश की नेकनामी की बातें हैं ? जब हम बाहर जाते हैं तो हमारा सर झुक जाता है। मैं विदेशों में जाता हूं लोग पूछते हैं भाई तुम्हारे देश में रोज़ दंगा होता है, रोज़ एक किस्सा होता है, हंगामा होता है। क्या जवाब है इसका, सिवाये इसके कि सर झुका लूं और कहूं कि भाई अज्ञानता के कारण है जब सभ्यता आयेगी, शिक्षा का प्रसार होगा, खुदा का डर होगा तो यह सब नहीं होगा। कब होगा वह ? उससे पहले तो क़यामत आ जायेगी। इतने दिनों से तो हम देख रहे हैं, कुछ नहीं हुआ। कैसे–कैसे रिफारमर पैदा हुए। गांधी जी ने क्या शिक्षा दी ? और इसी तरफ़ के रहने वाले मुहम्मद अली, शौकत अली ने किस प्रकार हिन्दू मुस्लिम एकता का नारा लगाया ।

www.abulhasanalinadwi.org

सारे देश में एक नशा सा छा गया। मैंने देखा है। और लोगों ने भी देखा होगा। मैं दस ग्यारह साल का था ईश्वर की महिमा है। अगर कहीं हिन्दुस्तान वैसे रह जाता तो क्या अच्छा होता। दिल से दिल मिले हुए थे, हिन्दू मुसलमान गले मिलते थे कैसा अच्छा ज़माना था, लेकिन अंग्रेज की चाल चल गई। लार्ड हार्डिंग ने यहां एक खेल खेला। उसने लड़ा के दिखा दिया। और फिर उसके बाद आज तक वह दृश्य नहीं देखा। कहीं कहीं हमने उस दृश्य की झलक देखी है और उस की झलक यहां भी नज़र आती है कि आज आप लोग बिना किसी भेद–भाव के इतनी संख्या में यहां एकत्र हुए हैं। एक ऐसे व्यक्ति की बात सुनने के लिए जिसको आप जानते नहीं, पहचानते नहीं और उसका व्यक्तित्व कुछ नहीं।

यह लम्बी नीन्द है

निराश होने की कोई बात नहीं । ख़ुदा का शुक्र है कि हमारा देश सोया है मरा नहीं है, सोया हुआ जगाया जा सकता है लेकिन मरा हुआ जिलाया नहीं जा सकता। हम सोये हैं, मरे नहीं, ख़ुदा का शुक्र है उस पालनहार का शुक्र है, हम कई बार सोये कई बार जागे। यह मानवता कई बार सोई कई

बार जागी। और जागी तो ऐसी जागी कि सोने की सारी कमी पूरी कर दी। हम आशावान हैं कि हमारा देश जब जागेगा तो इस सोने में जो त्रुटियां हुई, वह जो सोते हुए उसका हाथ किसी पर पड़ गया था, किसी को तकलीफ़ हुई थी, सब की क्षमा मांग लेगा। यह सोने वाला जब जागेगातो सबकी क्षमा मांगेगा। सबके पांव पकड़ेगा कि सोने में अगर कोई बात हुई हो तो हमें क्षमा कीजिए। हमें जानकारी न थी। यह सब एक लम्बी नीन्द है जिसको आप देख रहे हैं।

मैं इन दंगा करने वालों को सोया हुआ इन्सान समझता हूं। इनको राक्षस नहीं समझता, इनके अन्दर का इन्सान सो गया है और इनके बाहर का हैवान (दानव) जाग गया है और चाहिए यह कि इनके बाहर का दानव सो जाये और इनके अन्दर का मानव जाग जाये।

हमें अपने सम्बन्ध में कोई भ्रम नहीं। अपने बारे में हमें कोई धोखा नहीं कि हम दुनिया में कोई बड़ी क्रान्ति ले आयेंगे। हमें अपनी वास्तविकता ख़ूब मालूम है। मगर क्या करें बैठा नहीं जाता। हम अख़बार ही देखने को ज़िन्दा रह गये ? हम दंगों की ख़बरें सुनने के लिए ज़िन्दा रह गये ? हम

मानवता का अपमान ही देखने के लिए जीवित रह गये ? हम से अभागा कौन है ? अरे भाई अख़बार में पढ़ने के बजाय हमसे जो कुछ हो सकता है हम वह करें।

मैंने १६५१–५२ ई. से यह काम प्रारम्भ किया था। जब मैं हिन्दुस्तान के बाहर से आया और यहां देखा तो मुझसे रहा न गया। मैंने उस समय पुकार लगाई मेरे जो लेख "मानवता का सन्देश" के नाम से प्रकाशित हुए हैं उन्हीं दिनों के हैं, मगर इसके बाद मैं दूसरे कामों में लग गया।

ख़ुदा मुझे क्षमा करे, मेरा मालिक मुझे मआफ़ करे, मुझे इस काम को सर्वोपरि रखना चाहिए था।

बस मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। मैंने आपका बहुत समय लिया। लेकिन मैं समझता हूं कि मैंने यहां जो बात कही वह ख़ुदा लगती भी कही और आप की अपनी कहानी सुनाई आपको।

●●●

www.abulhasanalinadwi.org